

# भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजी०) चेन्नई

ज्योतिष प्रवीण परीक्षा : जून 2011

## प्रश्न पत्र-III

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

कोई भी पाँच प्रश्न हल करें। प्रश्न 1 तथा 6 अनिवार्य हैं। दोनों भागों में से कम से कम एक-एक प्रश्न का चयन करते हुए तीन अन्य प्रश्नों के उत्तर दें। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

### भाग-I (ज्योतिष योग)

1. क. ज्योतिषी यह कैसे निर्धारित करता है कि भाव व भावाधिपति बली है?  
ख. फलादेश में ग्रहों की अवस्था का किस प्रकार प्रयोग किया जाता है?
2. निम्न जन्मांग का सामान्य विवेचन करें :-  
लग्न : कन्या 28:51, सूर्य : मेष 11:40, चन्द्रमा : मकर 09:06  
मंगल : मकर 27:33, बुध : मीन 18:33, गुरु : मकर 16:43  
शुक्र : मेष 15:44, शनि : वृषभ 24:23, राहु : धनु 16 : 23  
(25.4.1973, 18:00, मुम्बई)
3. निम्न का उत्तर दें :-  
i) नवाशं का महत्त्व ii) भावात् भावम  
iii) विमसोपाक बल iv) लग्नेश
4. नीच भंग राजयोग क्या है? समझाएं। प्रश्न 2 में क्या यह उपस्थित हैं?
5. एक ग्रह, जो दो भावों का अधिपति है, किस प्रकार के फल अपनी दशा अन्तर दशा में देता है (कब और कैसे दोनो भावाधिपति का फल फलीभूल होता है)?

### भाग-II (दशा व गोचर)

6. निम्न का उत्तर दें :-  
(क) विंशोत्तरी महादशा के सामान्य नियम क्या हैं?  
(ख) प्रश्न 2 के लिए जन्म पर दशाशेष व सभी महादशाओं की गणना करें।
7. वेध, विपरीत वेध व वामवेध क्या है? समझाएं।
8. निम्न का उत्तर दें :-  
क) राहु महादशा के सामान्य फल बताएं।  
ख) प्रश्न 2 की कुण्डली के लिए बृहस्पति महादशा एवं शनि अन्तर दशा के लिए फलादेश करें।
9. निम्न का उत्तर दें :-  
क) पर्याय क्या है? शनि के पर्याय फल बताएं।  
ख) "मात्र गोचर किसी घटना को नहीं दिखा सकता", इसका कारण बताएं।
10. मूर्ति निर्णय पद्धति क्या है? बृहस्पति ने 8 मई 2011 को साय 15:00 बजे मेष राशि में प्रवेश किया। पहली चार राशियों के लिए मूर्ति की गणना करें।